"Education for Knowledge, Science and Culture"
-Shiksahnmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe

कोल्हापूर

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR

(AN EMPOWERED AUTONOMOUS INSTITUTE)

INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL

2025-26

Essay Competition

1. **Name of Department**: **हिंदी (**Hindi**)**

2. **Name of Organized Activity** : **निबंध लेखन प्रतियोगीता**

3. **Date/ Duration** : 16/09/2025

4. **Aims and Objectives** : 1. निबंध लेखन प्रक्रिया से छात्रों अवगत कराना।
2. कलात्मक और वैचारिक लेखन की बरीकियों को समझाना।

5. **No. of beneficiaries** : **Total = 20**

Teachers		02
Students	Male	05
	Female	13

6. **Expenditure & funding agency**: --

7. **Brief description**: कलात्मक लेखन प्रक्रिया से छात्रों अवगत कराने हेतु निबंध लेखन प्रतियोगीता कराई गई। महाविद्यालय के सभी छात्रों के लिए यह प्रतियोगीता थी जिसमें छात्रों ने बडचढ कर हिस्सा लिया। इसका उद्देश्य कलात्मक लेखन प्रक्रिया से छात्रों को परिचित कराते हुए वैचारिक लेखन के लिए छात्र कितने तैयार हैं पता करना था। इस प्रतियोगीता में सफल हुए छात्रों को पुरस्कृत कर उन्हें प्रोस्ताहित किया गया।

8. **Outcomes** :1. निबंध लेखन प्रक्रिया से से छात्र परिचित हुए।
2. छात्रों की योग्यता का पता चला।
3. कलात्मक और वैचारिक लेखन के लिए छात्र कितने तैयार हैं पता चला।

9. **Photos** : सलग्न (Attached photos)

10. **Signatures of coordinator/ organizer**: **डॉ. आरिफ शौकत महात**
डॉ. दीपक रामा तुपे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापुर संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग, आय.क्यू.ए.सी.

और शिवाजी विद्यापीठ हिंदी प्राध्यापक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में

शैक्षणिक वर्ष 2025-26

दि. 09.09.2025

सूचना

महाविद्यालय के वरिष्ठ विभाग के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है हिंदी विभाग की ओर से दि.14 सितंबर, 2025 से 23 सितंबर, 2025 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया है। हिंदी सप्ताह में निम्नलिखित प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जा रहा है। जो छात्र प्रतियोगिताओं मे शामिल होना चाहते है वे अधिक जानकारी के लिए डॉ. आरिफ महात और डॉ. दीपक तुपे से संपर्क करे। प्रतियोगिताओं में विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया जायेगा और प्रतिभागी छात्रों को प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

संपर्क : 1) डॉ. आरिफ महात – 9860857089 2) डॉ. दीपक तुपे - 8805282610

विदयार्थी प्रतिनिधि : कु. नाझिया नदाफ, श्री चैतन्य मछले, कु.महेक मुल्लाणी

अ.क्र	तिथि	स्पर्धा का नाम	विषय	रुम नं.
1.	16.09.2025	निबंध प्रतियोगिता	1) भारतीय युवा कल और आज 2) महिला सशक्तीकरण 3) हिंदी भाषा महत्व् और राष्ट्रीय एकता 4) शिक्षणमहर्षि डॉ.बापूजी साळुंखे: जीवन और कार्य 5)कृत्रिम बुध्दीमता (AI) शाप या वरदान	213 समय सुबह 11 बजे
2	17.09.2025	काव्यवाचन प्रतियोगिता	स्वरचित या किसी एक कविता वाचन करना है। प्रस्तुति 5 मिनिट से अधिक ना हो	213
3	18.09.2025	समीक्षा लेखन प्रतियोगिता	किसी एक किताब , खेल, नाटक और फिल्म् की समीक्षा लिखना है। शब्दसीमा 700 से अधिक हो ।	213
4.	20.09.2025	विज्ञापन / पोस्टर प्रतियोगिता	किसी एक वस्तु / प्रोडक्ट का विज्ञापन शब्दचित्रों के माध्यम से तैयार कीजिए। किसी एक विषयपर पोस्टर तैयार कीजिए।	213
5	23.09.2025	हिंदी दिवस समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण	मान्यवरों के हाथों	201

डॉ. आरिफ महात

डॉ. आर. आर. कुंभार
प्राचार्य
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

Scanned with OKEN Scanner

Jr. College Recog.No. H.S.C./ 1074/R-1/DT : 8-8-1976
Jr. College Code No. 23-09-002
Jr. College Udise No. 27341301006
AISHE Code : C-11059

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Estd.: June 1964

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

२१३०.ई.वॉर्ड,ताराबाई पार्क, कोल्हापूर, ता. करवीर, जि. कोल्हापूर - ४१६००३
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संलग्नित
नॅक मानांकन : "A+" (सी.जी.पी.ए.-३.२९)
कॉलेज उईथ पोटेन्शियल फॉर एक्सलन्स, यु.जी.सी., न्यु दिल्ली
स्टार कॉलेज – डी.बी.टी. – भारत सरकार
आय. एस ओ . ९००१:२०१५

Ph. : 0231-2658612 | Fax : 0231-2658840 | Resi.: 0231-2653962 | Website :www.vivekanandcollege.ac.in | E-mail :info@vivekanandcollege.org

संस्थापक
डॉ. बापूजी साळुंखे
D.Lit.

अध्यक्ष
मा. ना. चंद्रकांत दादा पाटील
उच्च व तंत्र शिक्षण व संसदीय कार्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य

कार्याध्यक्ष
प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे
M.A.

सचिव
प्राचार्या सौ. शुभांगी गावडे
M.Sc.,B.Ed.

प्राचार्य
डॉ. आर.आर. कुंभार
M.Sc.,M.Phil.,Ph.D.

जावक क्रमांक व्हि.सी.के. / समक्ष / 2025-26

दिनांक : 14/9/2025

सेवा में
श्री विश्वंभर कुलकर्णी
अध्यक्ष, ज्युनिअर हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

विषय : निबंध प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में उपस्थित रहने हेतु ।

महोदय,

हमारे महाविद्यालय में दि. 14 सितंबर, 2025 से 24 सितंबर, 2025 हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया है। इस सप्ताह में दिनांक 16 सितंबर, 2025 को सुबह 11.00 बजे **निबंध** प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में उपस्थित रहने कृपा करें। उम्मीद है कि आप हमारा निमंत्रण स्वीकार कर छात्रों को मार्गदर्शन करें ।

धन्यवादसहित ।

भवदीय,

(डॉ. ए. एस. महात)
विभाग प्रमुख
विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

(डॉ.आर. आर. कुंभार)
प्राचार्य
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

E:Hindi dept\2223\small leter.

Scanned with OKEN Scanner

जावक क्रमांक व्हि.सी.के. / सभक /2025-26

दिनांक : 16/9/2025

सेवा में
श्री विश्वंभर कुलकर्णी
अध्यक्ष, ज्युनिअर हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

विषय : कृतज्ञता ज्ञापन . . . ।

महोदय,

हमारे महाविद्यालय में दि. 14 सितंबर, 2025 से 24 सितंबर, 2025 हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया है। इस सप्ताह में दिनांक 16 सितंबर, 2025 को सुबह 11.00 बजे **निबंध लेखन** प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में उपस्थित रहें। अत: महाविद्यालय का हिंदी विभाग आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हैं।

धन्यवादसहित ।

भवदीय,

(डॉ. ए. एस. महात)
विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

(डॉ.आर. आर. कुंभार)
प्राचार्य
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

E:Hindi dept\2223\small leter.

Scanned with OKEN Scanner

Jr. College Recog.No. H.S.C./ 1074/R-1/DT : 8-8-1976
Jr. College Code No. 23-09-002
Jr. College Udise No. 27341301006
AISHE Code : C-11059

''ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार''
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Estd.: June 1964

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)
२१३०,ई,वॉर्ड,ताराबाई पार्क, कोल्हापूर, ता. करवीर, जि. कोल्हापूर - ४१६००३
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संलग्नित
नॅक मानांकन : "A+" (सी.जी.पी.ए.-३.२९)
कॉलेज उईथ पोटेन्शियल फॉर एक्सलन्स, यु.जी.सी., न्यु दिल्ली
स्टार कॉलेज - डी.बी.टी. - भारत सरकार
आय. एस ओ . ९००१:२०१५

Ph. : 0231-2658612 | Fax : 0231-2658840 | Resi.: 0231-2653962 | Website :www.vivekanandcollege.ac.in | E-mail :info@vivekanandcollege.org

संस्थापक	अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	सचिव	प्राचार्य
डॉ. बापूजी साळुंखे D.Lit.	मा. ना. चंद्रकांत दादा पाटील उच्च व तंत्र शिक्षण व संसदीय कार्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य	प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे M.A.	प्राचार्या सौ. शुभांगी गावडे M.Sc.,B.Ed.	डॉ. आर.आर. कुंभार M.Sc.,M.Phil.,Ph.D.

जावक क्रमांक व्हि.सी.के. / समक्ष / 2025 - 26

दिनांक : 14/9/2025

सेवा में
सौ. एस. पी. वेदांते
ज्युनिअर हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

विषय : निबंध प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में उपस्थित रहने हेतु ।

महोदया,

हमारे महाविद्यालय में दि. 14 सितंबर, 2025 से 24 सितंबर, 2025 हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया है। इस सप्ताह में दिनांक 16 सितंबर, 2025 को सुबह 11.00 बजे **निबंध** प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में उपस्थित रहने कृपा करें। उम्मीद है कि आप हमारा निमंत्रण स्वीकार कर छात्रों को मार्गदर्शन करें ।

धन्यवादसहित ।

भवदीय,

(डॉ. ए. एस. महात)
विभाग प्रमुख
विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

(डॉ.आर. आर. कुंभार)
प्राचार्य
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

E:Hindi dept\2223\small leter.

Scanned with OKEN Scanner

Jr. College Recog.No. H.S.C./ 1074/R-1/DT : 8-8-1976
Jr. College Code No. 23-09-002
Jr. College Udise No. 27341301006
AISHE Code : C-11059

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Estd.: June 1964

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

२१३०,ई,वॉर्ड,ताराबाई पार्क, कोल्हापूर, ता. करवीर, जि. कोल्हापूर - ४१६००३
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संलग्नित
नॅक मानांकन : "A+" (सी.जी.पी.ए.-३.३१)
कॉलेज उईथ पोटेन्शियल फॉर एक्सलन्स, यु.जी.सी., न्यु दिल्ली
स्टार कॉलेज - डी.बी.टी. - भारत सरकार
आय. एस ओ . ९००१:२०१५

Ph. : 0231-2658612 | Fax : 0231-2658840 | Resi.: 0231-2653962 | Website :www.vivekanandcollege.ac.in | E-mail :info@vivekanandcollege.org

संस्थापक डॉ. बापूजी साळुंखे D.Lit. | अध्यक्ष मा. ना. चंद्रकांत दादा पाटील उच्च व तंत्र शिक्षण व संसदीय कार्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य | कार्याध्यक्ष प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे M.A. | सचिव प्राचार्या सौ. शुभांगी गावडे M.Sc.,B.Ed. | प्राचार्य डॉ. आर.आर. कुंभार M.Sc.,M.Phil.,Ph.D.

जावक क्रमांक व्हि.सी.के. / समहा/2025-26

दिनांक : 16/9/2025

सेवा में
सौ. एस. पी. वेदांते
ज्युनिअर हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

विषय : कृतज्ञता ज्ञापन . . . ।

महोदया,

हमारे महाविद्यालय में दि. 14 सितंबर, 2025 से 24 सितंबर, 2025 हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया है। इस सप्ताह में दिनांक 16 सितंबर, 2025 को सुबह 11.00 बजे **निबंध लेखन** प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में उपस्थित रहें। अत: महाविद्यालय का हिंदी विभाग आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हैं।

धन्यवादसहित ।

भवदीय,

(डॉ. ए. एस. महात)
विभाग प्रमुख
विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

(डॉ.आर. आर. कुंभार)
प्राचार्य
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर.
(अदिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

E:Hindi dept\2223\small leter.

Scanned with OKEN Scanner

निबंध लेखन प्रतियोगिता

विवेकानंद कॉलेज के हिंदी विभाग की ओर से हिंदी सप्ताह के दौरान दि. 16 सितंबर, 2025 को आयोजित निबंध प्रतियोगिता में शामिल छात्र एवं छात्राएँ.

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग

दि. 16/09/2025

कार्यक्रम का नाम- हिंदी विभाग एवं शिवाजी विद्यापीठ हिंदी प्राध्यापक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में सहभागी एवं उपस्थित छात्र

उपस्थिती पत्र

अ. क्र.	छात्र का नाम	कक्षा	हस्ताक्षर
1	महेक इमरान मुल्लाणी.	B.A.II	Mmulla
2.	नाजिया शकेश नदाफ	B.A.II	[illegible]
3.	कुणाल पंडित कांबळे	B.A.I	KPS
4.	रिफा झहिरअब्बास मुल्ला	B.A Ist	Rmulla
5.	सिफा झहिरअब्बास मुल्ला	B.A Ist	Smulla
6.	स्वाती दिपक हिंगोले.	B.A II	[illegible]
7.	जिनत फारूक शेख.	B.com Ist	Zinat.
8.	तृप्ती मानाजी सावंत	B.SC.ES-III	[illegible]
9.	वैष्णवी विक्रम ढेंगे	B.A-III	Vaishnavi
10.	आफताब अब्दुलगणी पटेल	B.A II	APatel
11.	अनिशा दीपक सावंत	B.A.I	A.D. Sawant
12.	अस्मिता कुमार आलासे	B.A.I	A.alase
13.	कु. सानिका सातगोंडा पाटील	B.A.I	Patil S.S.
14.	कु. प्रतिभा प्रदीप कदम	B.A.I	[illegible]
15.	कु. किर्तीका सुरेश कदम	B.A.III	KKkadam.
16.	शुभम युवराज साळोखे	B.A.III	[illegible]
17.	चैतन्य उमाकांत माने	B.A.III	C.V. Mane
18.	सिजान हुसेन काप...	B.A.III	

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

(डॉ. दीपक रामा तुपे)

डॉ. आरिफ महात

विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2025- 26

दि. 18 / 09 / 2025

प्रतियोगिता का नामः ~~समीक्षा~~ निबंध लेखन प्रतियोगिता अंकतालिका

अ.क्र.	प्रतिभागी का नाम	विषय की प्रस्तुति अंक 15	भाषा अंक 15	वर्तनी अंक 10	समापन अंक 10	कुल अंक 50	
1.	कु. मानिका आलगोंडा पाटील	12	12	09	09	42	①
2.	कु. नाजिया राकेश नदाफ	12	12	09	09	42	①
3.	कु. मेहेक इमरान मुल्लाणी	12	11	09	08	40	②
4.	कु. जिनत फारूख शेख	12	11	09	08	40	②
5.	कु. रिफा इलाहिअब्बास मुल्ला	10	10	08	09	37	
6.	कु. सिफा इलाहिअब्बास मुल्ला	10	10	08	09	37	
7.	कु. वैष्णवी विक्रम ढेंगरे	10	10	08	08	36	
8.	कु. प्रतिभा प्रदिप कदम	10	10	08	08	36	
9.	कु. तृप्ती मनाजी सावंत	10	09	08	08	35	
10.	कु. अस्मिता कुमार आलासे	10	09	08	08	35	
11.	कु. अनिषा दिपक सावंत	09	10	08	07	34	
12.	कु. स्वाती दिपक हिंगोले	10	09	08	07	34	
13.	कु. किर्तिका सुरेश कदम	08	08	08	06	30	
14.	कु. शुभम युवराज साबळे	08	08	08	06	30	
15.	चैतन्य उमाकांत मधले	08	07	08	06	29	

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

परीक्षक का नामः प्रा. विश्वंभर कुलकर्णी

हस्ताक्षरः

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2025 - 26

दि. 16/09/2025

प्रतियोगिता का नामः निबंध प्रतियोगिता अंकतालिका

अ.क्र.	प्रतिभागी का नाम	आशय अंक 15	प्रस्तुतीकरण अंक 15	भाषा अंक 10	श्रोताओं पर प्रभाव अंक 10	कुल अंक 50
16	कुणाल पंडित कांबळे	08	07	06	08	29
17	सिजान हुसैन कापडी	07	07	07	07	28
18	आफताब अब्दुलगणी पटेल	07	07	07	06	27
4.						
5.						
6.						
7.						
8.						
9.						
10.						
11.						
12.						
13.						
14.						
15.						

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

परीक्षक का नामः (प्रा. विश्वंभर कुलकर्णी)

हस्ताक्षरः

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2025 - 26

दि. 16/09/2025

प्रतियोगिता का नाम: निबंध प्रतियोगिता अंकतालिका

अ.क्र.	प्रतिभागी का नाम	आशय अंक 15	प्रस्तुतीकरण अंक 15	भाषा अंक 10	श्रोताओं पर प्रभाव अंक 10	कुल अंक 50	
1.	कु. सानिका सातगोंडा पाटील	12	12	09	08	41	①
2.	कु. नाजिया राकेश नदाफ	12	12	09	08	41	
3.	कु. महेक इमरान मुल्लाणी	11	11	09	08	39	②
4.	कु. जिनत फारुख शेख	11	11	09	08	39	
5.	कु. रिफा शहिरअब्बास मुल्ला	10	10	08	09	37	③
6.	कु. सिफा शहिराअब्बास मुल्ला	10	10	08	09	37	
7.	कु. वैष्णवी विकास हेंगरे	10	10	08	08	36	
8.	कु. प्रातिभा प्रादिप कदम	10	10	08	08	36	
9.	कु. तृप्ती मनाजी सावंत	10	09	08	08	35	
10.	कु. आस्मिता कुमार ओलासे	10	09	08	08	35	
11.	कु. अनिषा दिपक सावंत	09	10	08	07	34	
12.	कु. स्वाती दिपक हिंगोले	10	09	08	07	34	
13.	कु. कीर्तिका सुरेश कदम	08	08	08	06	30	
14.	शुभम युवराज साबळे	08	08	08	06	30	
15.	चैतन्य उमाकांत मछले	08	07	08	06	29	

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

परीक्षक का नाम:

हस्ताक्षर: [signature]

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2025–2026

प्रतियोगिता का नाम : निबंध लेखन प्रतियोगिता अंकतालिका

दि. 18/9/2025

अ.क्र.	प्रतिभागी का नाम	विषय की प्रस्तुति अंक 15	भाषा अंक 15	वर्तनी अंक 10	समापन अंक 10	कुल अंक 50
1.	कुणाल पंडित कोळेकर	08	07	06	08	29
2.	सिजान हुसैन कापडी	07	07	07	07	28
3.	आलताफ अब्दुलगणी पटेल	07	07	07	06	27
4.						
5.						
6.						
7.						
8.						
9.						
10.						
11.						
12.						
13.						
14.						
15.						

परीक्षक का नामः प्रो. वेदांते एस. पी.

हस्ताक्षरः [illegible]

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

ज्युनियर हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2025 – 26

संकलित अंकतालिका

प्रतियोगिता का नामः निबंध प्रतियोगिता   दि.

अ.क्र.	प्रतिभागी का नाम	परीक्षक 1	परीक्षक 2	कुल अंक
1.	कु. सानिका सातगोंडा पाटील	42	41	83
2.	कु. नाजिया राकेश नदाफ	42	41	83
3.	कु. महेक इमरान मुलाणी	40	39	79
4.	कु. जिनत फारूख शेख	40	39	79
5.	कु. रिफा झहिरअब्बास मुल्ला	37	37	74
6.	कु. सिफा झहिरअब्बास मुल्ला	37	37	74
7.	कु. वैष्णवी विक्रम ढेंगरे	36	36	72
8.	कु. प्रतिभा प्रदीप यादव	36	36	72
9.	कु. तृप्ती मानाजी सावंत	35	35	70
10.	कु. अस्मिता कुमार आलासे	35	35	70
11.	कु. आनिशा दिपक सावंत	34	34	68
12.	कु. स्वाती दिपक हिंगोले	34	34	68
13.	कु. किर्तीका सुरेश कदम	30	30	60
14.	कु. शुभम युवराज साबळे	30	30	60
15.	कु. चैतन्य उमाकांत मछले	29	29	58

1. प्रथम क्रमांकः—
2. द्वितीय क्रमांकः—
3. तृतीय क्रमांकः
4. उत्तेजनार्थ 1:
5. उत्तेजनार्थ 2:

परीक्षक

परीक्षक
(प्रा. विश्वंभर कुलकर्णी)

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापुजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

ज्युनियर हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2025 – 26

संकलित अंकतालिका

प्रतियोगिता का नामः निबंध प्रतियोगिता　　　　दि.

अ.क्र.	प्रतिभागी का नाम	परीक्षक 1	परीक्षक 2	कुल अंक
1.	कु. कुणाल पंडित कांबळे	29	29	58
2.	कु. सिजान हुसैन कापड़ी	28	28	56
3.	कु. आफताब अब्दुलगणी पटेल	27	27	54
4.				
5.				
6.				
7.				
8.				
9.				
10.				
11.				
12.				
13.				
14.				
15.				

1. प्रथम क्रमांकः सानिका सातगोंडा पाटील, नाजिया शकेशा नदाफ
2. दवितीय क्रमांकः महेक इमरान मुलाणी, जिनत फारूख शेख
3. तृतीय क्रमांकः शिफा जहिरअब्बास मुल्ला, शिफा जहिरअब्बास मुल्ला
4. उत्तेजनार्थ 1: —
5. उत्तेजनार्थ 2: —

परीक्षक [signature]
(प्रा. डॉ. एस. वी. वेदांते)

परीक्षक [signature]
(प्रा. विश्वंभर कुलकर्णी)

Scanned with OKEN Scanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष - 2025 - 26

दि. 16/09/2025

निबंध प्रतियोगिता रिपोर्ट

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर के (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त) के हिंदी विभाग की ओर से 16 सितंबर, 2025 को आयोजित हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता कक्षा क्रमांक 213 में संपन्न हुई। इस निबंध प्रतियोगिता के लिए भारतीय युवाः कल औश्र आज, महिला सशक्तीकरण, हिंदी भाषा का महत्व और राष्ट्रीय एकता, शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साळुंखेः जीवन और कार्य, कृत्रिम बुद्धिमता (AI): शाप या वरदान आदि विषय दिए गए थे। इसमें छात्रों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता का परीक्षन ज्युनियर हिंदी विभाग के अध्यक्ष विश्वंभर कुलकर्णी और ज्युनियर हिंदी विभाग की प्राध्यापिका एस. पी. वेदांते ने किया। इस प्रतियोगिता में बी. कॉम. भाग तीन की छात्रा सानिका सातगोंडा पाटील और बी. ए. भाग दो की छात्रा नाजिया राकेश नदाफ प्रथम पर रहीं तो बी.ए. भाग दो की छात्रा महेक इमरान मुलाणी और बी. कॉम. भाग एक की छात्रा जिनत फारूख शेख दूसरे क्रमांक पर रहीं। बी. ए. भाग एक की छात्रा रिफा झहिरअब्बास मुल्ला और बी. ए. भाग एक की छात्रा सिफा झहिरअब्बास मुल्ला तीसरे क्रमांक पर रहीं। इसमें बी.ए., बी. कॉम., स्नातकोत्तर अनुवाद पदविका के छात्र शामिल थे। कार्यक्रम का संयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. आर. कुंभार जी के मार्गदर्शन में हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ.आरिफ महात और हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दीपक तुपे ने किया।

Tupetz
डॉ. दीपक तुपे

Tupetz
for विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

• हिंदी भाषा महत्व और राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय हैं संपूर्ण भारत को एकता एवं अखण्डता के सूत्र में बाँधे रखना। जब तक राष्ट्र के नागरिक परस्पर एकता के सूत्र में नहीं बँधते तब तक राष्ट्र की सर्वांगीण प्रगति संभव नहीं हैं। भारत एक ऐसा राष्ट्र हैं जिसमें विभिन्न धर्म, विभिन्न भाषाएं एवं विभिन्न संस्कृतियां हैं, किन्तु यह विभिन्नता में एकता का मंत्र भारत का उद्घोष हैं भारत के मूल निवासी इतने सहिष्णु एवं उदार रहे कि उन्होंने बाहर से आने वाले लोगों को अपना लिया। उनके धर्म, संस्कार, पूजा पद्धति में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं किया गया। परिणाम यह हुआ कि देश में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी सभी एक साथ अपनी- अपनी पूजा पद्धति अपने-अपने इष्टदेव एवं अपनी-अपनी संस्कृति को लेकर माला में गूंथे हुए मनको की भांति एकता के सूत्र में जुड़े रहे।

राष्ट्र एक सांस्कृतिक शब्द हैं, जिसका अभिप्राय केवल भौगोलिक सीमाओं से नहीं लिया जाता अपितु यह हमारे जातीय गौरव जातीय स्वाभिमान एवं जातीय चरित्र को अभिव्यक्त करता हैं। साम्प्रदायिकता की भावना राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं। जब एक वर्ग अलगाव की बात करता हैं और दूसरे वर्ग के प्रति विद्वेष, असन्तोष एवं ईर्ष्या के भाव रखता हैं, तब राष्ट्रीय एकता की भावना को खतरा पैदा हो जाता हैं। इसी प्रकार प्रान्तीयता, भाषावाद, क्षेत्रीयता, जातिवाद भी राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व हैं देशवासियों में राष्ट्रीयता का भाव जगाने में हिन्दी का योगदान पहले से ही हैं। स्वतंत्रता के आंदोलन में हिन्दी के अनेक साहित्यकारों की कलम से निकले शब्दों ने भारतीयों को देश पर-मर मिटने के लिए प्रेरित किया। वर्तमान समय में भी हिन्दी राष्ट्रीय एकता का बहुत बड़ा माध्यम हैं। भले ही अभी तक हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अंगीकार नहीं किया गया हो, लेकिन वास्तविकता यही हैं कि हिन्दी भारत की आत्मा हैं, राष्ट्रीय एकता की पोषक हैं और राष्ट्रभाषा का सम्मान पाने की अधिकारी भी हिन्दी ही हैं।

"हम सबका अभिमान है हिन्दी
भारत माँ की शान है हिन्दी।"

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। देश के विभिन्न प्रान्तों में अलग- अलग भाषाओं का बोलबाला है। हिन्दी, पंजाबी, सिन्धी उड़िया, बंगला, असमिया, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम भारत की प्रमुख भाषाएं हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न खड़ा होता है कि कौन सी भाषा राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित की जाए। किसी देश की राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसका अपने देश की बहुसंख्यक जनता बोलती-समझती हो तथा वह अन्य प्रान्तीय भाषाओं के साथ भी घनिष्ठ संबंध रखती हो। अन्य भाषाओं के शब्दों को पचाने की क्षमता भी उस भाषा में होनी चाहिए। इस दृष्टि से विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाएं केवल अपने- अपने प्रान्त में सीमित हैं, उन्हें बोलने वालों की संख्या भी सीमित है, जबकि हिन्दी का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

"हिंदी है भारत के एकता
और अखंडता की पहचान,
हिंदी ही तो है मेरे देश की
शान और जान।"

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है, क्योंकि यह बहुसंख्यक लोगों की भाषा है तथा इसका क्षेत्र व्यापक है। हिन्दी क्षेत्र के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ बिहार, झारखण्ड और राजस्थान राज्य आते हैं। इन राज्यों में तो हिन्दी का बोलबाला है ही, इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र गुजरात, पंजाब, कश्मीर, पश्चिमी बंगाल में भी हिन्दी का बोलबाला है ही, इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र गुजरात, पंजाबी कश्मीर, पश्चिमी बंगाल में भी हिन्दी बोलने-समझने वाले लोगों की कमी नहीं है। देश के अन्य प्रांतो में भी हिन्दी बोलने वाले लोग चाहे कम संख्या में हो लेकिन हैं अवश्य। स्पष्ट है कि हिन्दी भारत के सर्वाधिक लोगों की पहचान है।

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना और इसे राष्ट्रीय पहचान के रूप में मजबूती देना है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा का

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

दर्जा दिया था। इस दिन को 'राष्ट्रीय हिंदी दिवस' के नाम से भी जाना जाता है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है और देश के विभिन्न हिस्सों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हिंदी दिवस के अवसर पर, सरकारी और शैक्षिक संस्थानों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे निबंध प्रतियोगिताएँ, भाषण और साहित्यिक समारोह। साथ ही, कुछ संस्थानों में हिंदी पखवाड़ा भी मनाया जाता है, जो 15 दिनों तक चलता है, जिसमें हिंदी भाषा के महत्व को उजागर करने के लिए कई गतिविधियाँ होती हैं। हिंदी पखवाड़ा का उद्देश्य भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसके उपयोग को प्रोत्साहित करना है। हिंदी दिवस हमें अपनी भाषा पर गर्व और सम्मान करने का अवसर देता है।

जन-जन की भाषा है हिंदी
भारत की आशा है हिंदी...
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा है हिंद...
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिंदी
एकता की अनुपम परम्परा है हिंदी
जिसके बिना हिन्द थम जाए
ऐसी जीवनरेखा है हिंदी...
जिसने काल को जीत लिया है
ऐसी कालजयी भाषा है हिंदी...
सरल शब्दों में कहा जाए तो
जीवन की परिभाषा है हिंदी...

भाषा मानव के व्यवहार एवं प्रवृत्ति का मुख्य साधन है. मनुष्य के समस्त क्रियाकलाप एवं आचरण भाषा के माध्यम से ही संपन्न होते हैं। मनुष्य और मनुष्य बीच ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।

देश की एकता के लिए एक भाषा का होना जितना आवश्यक है उससे अधिक आवश्यक है देश भर के लोगों में देश के प्रति विशुद्ध प्रेम तथा अपनापन होना अगर आज हिन्दी भाषा मान ली गई है तो इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है,

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा हो सकती है और सारे देश के लोग उसे अपना सकते हैं।

आधुनिक हिन्दी के निर्माता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की भाषा के संबंध में लिखी गई ये पंक्तियाँ आज के दिन हमारे लिए एक अभूतपूर्व प्रेरणा का संदेश दे रही हैं।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न मन को शूल॥

यसे यद्यपि हमारे देश के विभिन्न भागों में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, फिर भी हिन्दी हमारे देश की ऐसी भाषा है, जो प्रायः सारे देश में समान रूप से व्यवहार में लाई जाती है। उसके इस व्यापक रूप को समझते हुए ही सारे देश ने इसे 'राष्ट्र-भाषा के पावन अभियान से अभिषिक्त किया है। इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देशवासियों को उद्बोधित करते हुए एक बार यह ठीक ही कहा था।

जैसे अंग्रेज अपनी मातृभाषा अंग्रेजी में बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते हैं वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को भारतमाता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

गाँधी जी ने ही हिन्दी को राष्ट्र की उन्नति का मूल समझकर यह घोषणा नहीं की थी. प्रत्युत उनसे पूर्व भी देश के सभी अंचलों के समाज सुधारकों, संतों और नेताओं ने इसके महत्व को समझ लिया था। महाराष्ट्र में जहाँ ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में मराठी के आदि-कवि मुकुंदराज और संत ज्ञानेश्वर ने इसके महत्व को समझा था वहाँ-कालांतर में गोपाल नरहरि देशपांडे तथा केशव वामन पेठे नामक महानुभावों ने क्रमशः सन् 1875 तथा 1876 में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का अभिनंदनीय प्रयास किया था।

हिन्दी को यह महत्व इसलिए नहीं दिया गया था कि वह सारी भारतीय भाषाओं में ऊँची है, बल्कि उसे राष्ट्रभाषा इसलिए कहा और समझा जाता है कि हिन्दी को जानने, समझने और बोलने वाले देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं।

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

ये लोग चाहे हिन्दी न जानते हो, व्याकरण को भूला करते हों, अशुद्ध हिन्दी बोलते हो; परंतु बोलते हिन्दी ही हैं और उसी में अपने भाव व्यक्त करते एवं दुसरों की बात समझते है। वास्तव में हिन्दी की यह प्रकृति देश की एकता की परिचायक है और इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है। वह केवल हिन्दुओं या कुछ मुट्ठी भर लोगों की भाषा नहीं है, वह तो देश के कोटि कोटि कंठों की पुकार और उनका हृदयहार है।

हिन्दी के सुत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से चलकर दुसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदात्ता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिन्दी में ही है। चाहे सब लोग हिन्दी न जानते हो, लेकिन फिर भी इसके द्वारा वे अपना काम चला लेते है और इन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं होती। भारत की बहुभाषिकता के प्रश्न को उठाकर जो लोग हिन्दी को राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण स्थान पर अधिष्ठित करने में रूकावट डाल रहे हैं, वे यह कैसे भूल जाते है कि आज विश्व के सर्वाधिक शक्ति संपन्न देश रूस ने इस समस्या का किस प्रकार समाधान किया है। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि सोवियत संघ यद्यपि 66 भाषाएँ बोली तथा लिखी जाती हैं; किन्तु फिर भी वहाँ की राष्ट्रभाषा रूसी ही है। सोवियत संघ की मंगोल और तुर्की भाषाओं के शब्दों का रूसी भाषा से कोई संबंध नहीं है। इसके विपरित यहाँ की दक्षिणा की भाषाओं के प्राय: 60 प्रतिशत शब्द मिल जाते हैं। तमिल को हम अपवाद के रूप में रख सकते हैं, किन्तु उसमें भी कुछ शब्द तो ऐसे मिल जी जाते हैं, जिन्हें भारत की दुसरी भाषाओं के बोलने वाले सरलता से समझ लेते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हिन्दी के ही माध्यम से भारत के अनेक संतों, सुधारकों, मनीषियों और नेताओं ने अपने विचारों का प्रसार एवं प्रचार किया था। अपनी दुरदर्शिता के कारण उन्होंने ऐसी ही भाषा को अपनी भाव-धारा के प्रचार का साधन बनाया था, जो देश के सभी भूभागों के अधिकांश जनसमुदाय को एकता के सुत्र में पिरो सकती थी।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

हिन्दी के सार्वजनिक उपयोगिता और महत्ता का इसी से पता चलता है कि इसे दुसरे प्रदेशों के निवासी नेताओं और विचारकों ने अपने विचारों के प्रकट करने का माध्यम बनाया था। आज दक्षिण के चारों राज्यों में हिन्दी का जो सफल लेखन, पठन और अध्यापन हो रहा है उसमें भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा स्थापित 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा' जैसी अनेक संस्थाओं का अत्यधिक योगदान है। इसी प्रकार उडीसा, असम तथा मेघालय में भी हिन्दी का व्यापक प्रचार तथा प्रसार परिलक्षित होता है।

धर्म जाति के अंतर को तोड़ो,
हाथ मिलाओ भारत को जोड़ो।

राष्ट्रीय एकता का बहुत बड़ा है प्रभाव,
इससे उत्पन्न होता देश में सद्भाव।

अनेकता में एकता ही है
भारत की पहचान,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख
और ईसाई है यहाँ की शान।

सभी धर्म की अब एक ही पुकार,
एकता के स्वप्न को करो साकार।

एकता में बहुत बल है,
यह राष्ट्र की हर समस्या का हल है।

हाथ मिलाकर एक साथ चलेंगे,
हम विश्व में एकता की मिसाल बनेंगे॥

हर एक देश की पहचान उस देश की भाषा और सांस्कृति से होती है। किसी भी देश की एकता में उस देश की राष्ट्रभाषा अहम भूमिका निभाती है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है।

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

हिंदी भारत की राजभाषा है और यह दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, साहित्य और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी है। हिंदी की भाषा का महत्व इसलिए भी है, क्योंकि यह भारतीय समाज की विविधता को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

हिंदी भाषा भारत के लगभग सभी राज्यों में बोली जाती है और यह विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को एक साथ जोड़ने में मदद करती है। भारत की स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी ने एक अहम भूमिका निभाई। महात्मा गांधी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी का उपयोग जनता को जागरूक करने और उन्हें एकजुट करने के लिए किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने न केवल एक भाषा के रूप में बल्कि एक आंदोलन के रूप में काम किया। हिंदी भारतीय समाज की विविधता को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

आधुनिक समय में हिंदी का महत्व बढ़ गया है। क्योंकि यह केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कई देशों में बोली जाती है। इसके अलावा, हिंदी भाषा का साहित्य भी समृद्ध है, जिसमें कवि, लेखक और साहित्यकारों की रचनाएँ भारतीय संस्कृति और परंपराओं का परिचय कराती है।

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ हर राज्य में अपनी अलग भाषा और संस्कृति है। ऐसे में, हिंदी एक कड़ी की तरह काम करती है जो सभी भारतीयों को जोड़ने का काम करती है। यह भारतीयों के बीच संवाद का एक सामान्य माध्यम है। चाहे उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत, हिंदी का प्रयोग सभी जगह होता है, जिससे राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन मिलता है। हिंदी की एकता और अखंडता की भावना, भारतीयों के दिलों में एकता और भाईचारे का संदेश भेजती है। आज के समय में, मिडिया, शिक्षा, राजनीति और व्यवसाय में हिंदी का व्यापक उपयोग होता है, जो इसे एक सशक्त और प्रभावशाली भाषा बनाता है।

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

हिंदी भाषा का महत्व न केवल इसके साहित्य और इतिहास में है, बल्कि यह भारत की राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार के रूप में भी काम करती है। यदि हम सभी मिलकर हिंदी को सम्मान दें और इसका प्रयोग करें, तो यह हमारी सांस्कृतिक पहचान को और मजबूत करेगी और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देगी।

" देश के सबसे ज्यादा हिस्से में हिन्दी ही लिखी जाती है। अगर हम साधारण बुद्धि से काम ले तभी हमें पता चलेगा कि हमारी कौमी जबान हिन्दी ही हो सकती है। सुप्रसिद्ध मनीषी आचार्य क्षितिमोहन सेन ने भाषा को किसी भी देश की एकता का प्रधानतम साधन मानते हुए हिन्दी की महत्ता की जो प्रतिष्ठापना की थी वह हमारे लिए उपेक्षणीय नहीं है। उन्होंने कहा था। अंग्रेजी भाषा की महिमा इसलिए नहीं है कि यह हमारे शासकों की भाषा थी, बल्कि इसलिए है कि उसने संसार की समस्त विद्याओं को आत्मसात किया है। हिन्दी को भी यह पद पाना है। उसे भी नाना विद्याओं, कलाओं और संस्कृतियों की त्रिवेणी बनना होगा। हिन्दी में वह क्षमता है। बिना ऐसा बने भावी की साधना अधुरी रह जाएगी। भाषा हमारे लिए साधन है, साध्य नहीं मार्ग है, गंतव्य नहीं, आधार है आधेय नहीं।"

" हिन्दी को आगे बढ़ाना है,
उन्नति की राह पर ले जाना है।
केवल एक दिन ही नहीं,
हमें नित हिंदी दिवस मनाना है।। "

नाम = सानिका सातगोंडा पाटील
कक्षा = B.com[TY]
विषय = हिंदी भाषा महत्व और राष्ट्रीय एकता [निबंध लेखन]
मो.नं = 8149941832

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME | TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS | SUBJECT
ROLL NO. | DATE

नाम : नाजिया रफीक नदाफ
कक्षा : बी.ए. भाग - II
मो.नं : 9579243421
निबंध लेखन विषय : "भारतीय युवा कल और आज"

■ भारतीय युवा कल और आज ■

" युवा वही होता है जिसके.....
हाथों में शक्ति, पैरो में गति,
ह्रदय में ऊर्जा और अपनी
आखों में सपने होते हैं।"

- स्वामी विवेकानंद जी।

आज के आधुनिक युग के भारतीय युवाओं मे और पहले या अतीत के युवाओं मेजमीन - आसमान का फर्क नजर आता हैं। शुरूवाती दौर का युवा सादा जीवन जीते थे, और उनका मुख्य उद्देश समाज के लिए काम करना और उनके लिए त्याग करने की भावना थी। आज के युवाओं के पास अच्छी शिक्षा है, तकनीक की (AI) की कृत्रिम बुद्धीमता का साथ हैं और समाज मे उनके लिए अनेक अवसर है जिन्हे वो कार्यान्वित कर सकते हैं। अपने पास के कौशल से स्वंय का और समाज का विकास कर सकते हैं। आज के युवा कल के मुल्यों से प्रेरणा लेकर और आज के ज्ञान का सही उपयोग करके अपने देश का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं। पहले वाले युवा जनरेशन अपनी मेहनत से सारा काम करके खुश रहती थी और आज की युवा जनरेशन अपने मोबाईल, लॅपटॉप से ही पूरी दुनिया की फतेह करने की कोशिश में जी-जान से लगी हुई हैं। आज के भारतीय युवा अपने दैनिक जीवन के लगभग हर काम के लिए इंटरनेट पर निर्भर रहती हैं। इसके विपरित, पुराने जनरेशन के युवा अपने कामों के लिए खुद पर निर्भर रहती थी। वैसे देखा जाए तो आज के युवाओं का समावेश १९९७-2012 यानी 'जेनरेशन - Z' (Gen-Z) के अंदर आता हैं।

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

■ भारतीय युवा : कल

कल वाले भारतीय युवाओं में पारंपरिक सोच थी। उनका ध्यान समाज की अपेक्षाओं पर केंद्रीत था। उनके पास करियर के विकल्प सीमित थे, जैसे की खेती, डॉक्टर, इंजीनियर, वकिल, सरकारी नौकरी आदी। उनको शिक्षा के साधन कम उपलब्ध थे और कुछ ही लोगों को उच्च-शिक्षा मिल पाती थी। उनके दौर में तकनीकी साधनों का अभाव था। जनसंचार के दो या तीन ही साधन थे। उनमे रेडियो और टि.वी. थे। उस दौर के भारतीय युवा की सोच 'हम' को 'मैं' से पहले महत्त्व देना होता था। जीवनशैली साधारण सी होती थी। बचत पर ज़्यादा जोर होता था। परंपरा का और अनुशासन का पालन सक्ति से किया जाता था।

■ भारतीय युवा : आज

आज के भारतीय युवा की सोच आधुनिक और ग्लोबल है। उनके पास करियर के असीमित अनेक विकल्प हैं। उनमे स्टार्टअप, आईटी, आर्ट्स, स्पोर्ट्स, डिजिटल प्लेटफॉर्म, आदी। आज की युवा जनरेशन के पास उच्च शिक्षा और कौशल विकास (Skill-Development) के अनेक अवसर हैं। उनका इंटरनेट और सोशल-मीडिया से वैश्विक जुड़ाव हैं। आज के भारतीय युवा आत्म-निर्भरता और आत्मविश्वास पर जोर देते हैं। आज की उनकी जीवनशैली 'उपभोगवादी' स्वरूप की हैं। आज के भारतीय युवा को स्वतंत्र पहचान की चाह है, वह प्रतिस्पर्धी, तनाव और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति रखता हैं। परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण हमे आज के भारतीय युवाओं मे देखने को मिलता हैं।

■ 'कल के भारतीय युवा और आज के भारतीय युवा' इनके बीच के मुख्य अंतर इस प्रकार है :-

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

1) • कल के युवा : टेकनॉलोजी के प्रति सर्तक रहती थी और रिती-रिवाजों और सामाजिक बंधनों पर जोर देती थी।

• आज के युवा : टैकनोलोजी को आसानी से अपनाती है। व्यक्तीगत और स्वतंत्र सोच पर जादा जोर देती हैं।

2) • कल के युवा : अपनी परंपराओं को रस्म-रिवाजों को बनाए रखते थे और नई पीढ़ी से भी यही अपेक्षा रखते थे।

• आज के युवा : सांस्कृतिक बंधन और भेदभाव कम करने और पारंपारिक धारणाओं से आगे बढ़ने मे विश्वास रखते हैं।

3) • कल के युवा : पुराने संचार के माध्यमों पर निर्भर रहते थे। कई बार नई जनरेशन के व्यवहार को नही समझ पाते थे।

• आज के युवा : संवाद के लिए आधुनिक माध्यमों का उपयोग करती हैं। और अधिक स्वंतत्र व्यवहार को दर्शाती हैं।

4) • कल के युवा : जीवन के पुराने अनुभवों के आधार पर वर्तमान को देखती थी, और कई बार अनुभव के कारण नई चीजे अपनाने मे डरती थी।

• आज के युवा : तेज गति से बदलते समाज के अनुकूल खुद को ढालती हैं और अनुभवों के आधार पर नया सीखती रहती हैं।

• आज के भारतीय युवा नया सीखना और नए अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं। आज के भारतीय युवा अपनी जिन्दगी अपनी ~~मर~~ मर्जी से, अपने

Goodluck

Scanned with OKEN Scanner

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

स्वतंत्र निर्णय से जीना चाहती थी। आज के भारतीय युवा को किसी भी धर्म, जाती, लिंग या किसी भी आधार पर भेदभाव नही चाहता हैं। आज के भारतीय युवा ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ सभी को समान अवसर मिले और अन्याय न हो।

आखरी में यह समझना आसान हैं कि, कल की युवा जनरेशन अतीत के अनुभवों और परंपराओं को महत्व देती थी। जबकी, आज के भारतीय युवाओं का लक्ष्य भविष्य पर केंद्रीत हैं और वे समाज मे बदलाव एवं परिवर्तन को स्वीकार करते हैं।

" कल के युवा, गुजरा हुआ अतीत थे,
आज के युवा, आनेवाला नया भविष्य हैं।
कल के युवाओं में न थी हिम्मत,
परंपराओं की जंजीरे तोड़ने की,
आज के युवाओं में है साहस.....
वह जंजीरे तोड़ उड़ने की।
है हिम्मत अपने सारे सपने को,
साकार करने की......।"

"कल के युवा बीता हुआ कल थे।
आज के युवा 'भारत' का आनेवाला कल हैं।"

Scanned with OKEN Scanner

नाव :- महेक इमरान मुल्लाणी.
मो. नं :- 8999094024.

हिंदी भाषा :- राष्ट्रिय एकता

हिंदी भाषा :-

भाषा मानव के व्यवहार एवं बातचित का मुख्य साधन है। मनुष्य दुसरे मनुष्य से भाषा के माध्यम से हर एक कार्य को संपन्न कर सकता। हर एक मुशकील | अड्चण को हल कर सकता है।

देश के लिए हिंदी भाषा का महत्त्व :-

देश के लिए एकता के लिए एक भाषा का होना जितना आवश्यक है। उससे अधिक आवश्यक है देश भर के लोगों में देश के प्रति विशुध्द प्रेम तथा अपनापन होना अगर आज हिन्दी भाषा मान ली गई है तो इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है. बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा हो सकती है और सारे देश के लोग उसे अपना सकते है।

आधुनिक हिंदी के निर्माता भारतेन्दु बाबु हरिश्चन्द्र की भाषा के संबंध में लिखी गई ये पंक्तियाँ आज हमारे लिए एक प्रेरणा का संदेश दे रही है।

निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति के मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न तन को मूल।

अगर हमारे देश के विभिन्न भागों में अनेक भाषाएँ बोली जाती है फिर भी हिन्दी हमारे देश की ऐसी भाषा है. जो प्राय: सारे देश में समान रूप से व्यवहार में लाई जाती है। उसके इस व्यापक रूप को समझते हुए ही सारे देश ने इसे 'राष्ट्रभाषा के पावन अभिधान) से अभिषिक्त किया है। इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देशवासियों को उद्‌बोधित करते हुए एक बार यह ठीक ही कहा था।

जैसे अंग्रेज अपनी मातृभाषा अंग्रेजी बोलते है और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते है वैसे ही हमे भी हमारी मातृभाषा को हमारे दिनचर के व्यवहार मे उपयोग करना

चाहिए। हिंन्दी सब समझते है। मगर कुछ ही लोग उसे अपने उपयोग मे लाते है। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमे अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। हिंदी को सर्वउच्च प्राधन्य दे कर हमे राष्ट्रीय एकता दिखानी है। प्रत्युत पुर्व देश के सभी अंचलों के समाज सुधारकों, संतों और नेताओं ने इसके महत्व को समझ लिया था। महाराष्ट्र में जहाँ ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में मराठी के आदि-कवि मुकुंदराज और संत ज्ञानेश्वर ने इसके महत्व को समझा था वहाँ कालांतर में गोपाल नरहरि देशपांडे तथा केशव वामन पेठे नामक महामनीषियों ने सन 1875 तथा 1876 में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में ~~प्रतिनि~~ प्रतिष्ठित करने का अभिनंदनीय प्रयास किया था।

हिंन्दी को यह महत्व इसलिए नहीं दिया गया था कि वह सारी भारतीय भाषाओं में ऊँची है, बल्कि उसे राष्ट्रभाषा इसलिए कहा जाता है और समझा जाता है कि हिन्दी को जानने समझने और बोलने वाले देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं। वे लोग चाहे हिन्दी न जानते हों, व्याकरण को भूला करते हों, अशुद्ध हिन्दी बोलते हो परंतु बोलते हिंदी ही है और उसी में अपने भाव व्यक्त करते और दुसरों की बात समझते है। वास्तव में हिन्दी की यह प्रकृति ही देश की एकता की परिचायक है और इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है। हिंदी केवल हिन्दुओं या कुछ मुट्ठी भर लोगों की भाषा नहीं है, वह तो देश के कोटि-कोटि कंठों की पुकार और उनका हृदयहार है।

देश के सबसे ज्यादा हिस्से मे हिन्दी ही लिखी जाती है। अगर हम साधारण बुध्दि से काम ले तभी हमें पता चलेगा कि हमारी जबान हिन्दी ही हो सकती है। हिंदी की भाषा हमारे लिए साधन है, साध्य मार्ग, हमारी कामयाबी है। दुरदर्शिता के कारण भाषा को अपनी भाव-धारा की प्रचार का साधन बनाया है। ~~यही~~ उत्तर प्रदेश के कबीर, पंजाब के नानक, सिंध के सचल कश्मीर के लल्लाद, बंगाल के बाउल, असम के शंकरदेव आदि संतो ने जिस सांस्कृतिक एकता तो आधार बनाकर अपने काव्य

की रचना की थी, वहीं दक्षिण के वेमना आलवार आदि संतों की कविता की मूल भावभूमिका हिंदी ही थी।

इसमें उन्होंने अपना संदेश देश को दिया था और उसे वे एकता के की कड़ी के रूप मे देखते थे। भाषा वही महत्वपूर्ण होती है जो लोगों को तोड़ने के बजाय जोड़ने का संदेश दे और जिसके माध्यम से प्रेम का मार्ग प्रशस्त हो इसी पावन भावना प्रेरित होकर महाकवि जायसी ने यह कहा था।

तुरकी, अरबी, हिन्दुई भाषा जेती आहि।
जेहि मँह मारग प्रेम का सर्व सराहे ताहि।

यह प्रेम का मार्ग केवल हिन्दी के माध्यम से प्रशस्त हो सकता है। यदि ऐसा नहीं होता तो बंगाल के अद्वितीय सुधारक राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन जैसी मनीषी अपने विचारों के प्रचार के लिए उसे क्यों अपनाते? आर्यसमाज के संस्थापक महर्षी स्वामी दयानन्द सरस्वती और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने गुजराती होते हुए भी राष्ट्रीयता और समाज-सुधार की अपनी भावनाओं को हिंदी के द्वारा ही सारे देश में फैलाया।

अनेक समाज सुधारकोंने अन्य धर्म के होने के बावजुद हिंदी भाषा को अपनाकर हिंदी भाषा के सहारे अनेक प्रकार की जनसेवा की है, लोगों मे जागृता निर्माण की है देश में एकता लाने का प्रयास किया है। हमारी हिंदी भाषा राष्ट्रीय एकता को बनाई रखती है। हिंदी भाषा के द्वारा जब एक मनुष्य दुसरे मनुष्य से बात करते समय आदर, सन्मान, नरमी रखता है। इसलिए लोगों मे प्यार बढ़ता है।

इसलिए हिंदी भाषा के वजह से हमारी राष्ट्रीय एकता अभी तक मजबूत है। हमारे लिए हिंदी भाषा बहूत महत्वपूर्ण है।

धन्यवाद......!